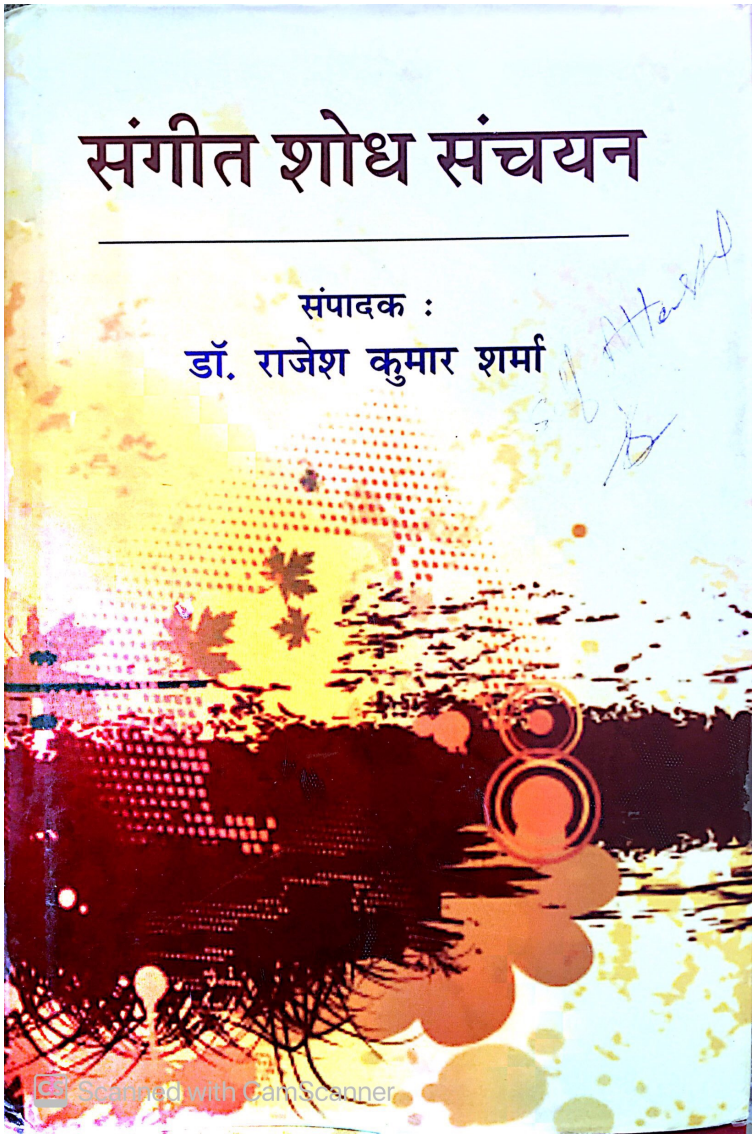
संगीत शोध संचयन
संपादक :
डॉ. राजेश कुमार शर्मा
Scanned with CamScanner

संजय प्रकाशन
4378/4 डी-209, जे.एम.डी. हाऊस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

©

ISBN 978-81-7453-371-5

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : ₹ 950.00

शब्द संयोजन :
हर्ष कंप्यूटर्स
दिल्ली-110086

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

आशीर्वचन (पं. विद्याधर व्यास) *v*
आशीर्वचन (PT. RAJENDRA PRASANNA) *vii*
संपादकीय *ix*
कृतज्ञता ज्ञापन *xi*
विशेषज्ञ समीक्षा समिति *xiii*
प्रो. मधु बाला सक्सेना *xv*
प्रो. भारती शर्मा *xvii*
श्री कलाकृष्ण *xix*

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षक : बड़ौदा के महाराजा श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ / डॉ. राजेश गोपालराव केलकर 1
2. Music in Kuchipudi Dance / Dr. Vanaja Uday 8
3. 'कश्मीर प्रांत का संगीत एवं लोक संगीत के विविध आयाम' / डॉ. दीपा वार्ष्णेय 18
4. Tabla: On the edges of time…. / Pandit Ashis Sengupta 32
5. तबला साहित्य–कल्पना एवं सौंदर्य / डॉ. राहुल स्वर्णकार 35
6. उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का स्थान : एक अवलोकन / डॉ. सुनील कुमार 41
7. सोलन जनपद की संस्कृति एवं संगीत / डॉ. दलीप कुमार शर्मा 46
8. Therapeutic Aspects of Indian Classical Music / Dr. Shambhavi Das 54
9. कलाओं के सरंक्षण में संगीत नाटक अकादमी का योगदान / डॉ. पूजा गोस्वामी 60

Scanned with CamScanner

उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का स्थान : एक अवलोकन

डॉ. सुनील कुमार

संगीत ईश्वर की सबसे बड़ी देन है। संगीत में स्वर रूपी ओजस धारा का रसास्वादन अत्यंत कठिन एवं दुर्गम है। स्वर से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है और ईश्वर ही स्वर देता है। संगीत हमेशा से ही आध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख साधन रहा है। भारत में संगीत धर्म एवं आध्यात्म से जुड़ा था और उसी पर उसकी नींव पड़ी।

संगीत को ऋषि-मुनियों ने साधना का साधन बनाया। कबीरदास जी ने भी नादोपासना को सबसे बड़ी उपासना बताया है। निरन्तर साधना कर ज्ञान प्राप्त करना मानव जीवन का सदैव से ही विशेष गुण रहा है। संगीत का भारतीय संस्कृति और समाज से अटूट सम्बन्ध है।

समय के साथ-साथ विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान से हमारा संगीत और भी समृद्ध हुआ तथा इसमें कई और नई संभावनाएँ भी दिखीं। शास्त्रीय संगीत की ख़्याल शैली, क़व्वाली, तराना आदि इन्हीं संस्कृतियों के मिश्रण का परिणाम है। इस प्रकार गायन शैलियों के साथ-साथ वाद्यों का भी विकास हुआ और कई नए वाद्य सामने आए। इनमें से कुछ वाद्यों के स्वरूप में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी किया गया, जबकि कुछ वाद्य उसी रूप में अपना लिए गए।[1]

पाश्चात्य संस्कृति ने जब भारत में प्रवेश किया तब साथ ही साथ उसके संगीत ने भी यहाँ प्रवेश किया। जिनमें से कुछ वाद्य शीघ्र ही यहाँ प्रसिद्ध हो गए।

हारमोनियम वर्तमान में भारतीय संगीत का सबसे लोकप्रिय वाद्य है। इसकी प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत के सभी संगीतप्रिय घरों में इसकी प्राप्ति सम्भव है। बजाने में सुगम और आसानी से उपलब्ध होने के

Scanned with CamScanner